संतोष कुमार चतुर्वेदी की दो कविताएं

2 नवम्बर 1971 में जन्मे संतोष चतुर्वेदी का पहला कविता संग्रह 'पहली बार' जल्द ही प्रकाशित हुआ है। विख्यात साहित्यिक पत्रिका 'कथा' के सहायक सम्पादक भी हैं।

भभकना

रोज की तरह ही उस दिन भी
सधे हाथों ने जलायी थी लालटेन
लेकिन पता नहीं कहां रह गयी थोड़ी सी चूक
कि भभक उठी लालटेन

हो सकता है कि
किरासिन तेल से
लबालब भर गयी हो लालटेन की टंकी
हो सकता है कि
बत्ती जलाने के बाद
शीशा चढ़ाने में थोड़ी देर हो गयी हो
हो सकता है कि
एक अरसे से लापरवाही बरतने के कारण

www.tadbhav.com

खजाने में जम गयी हो मैल

यह भी सम्भव है कि
टंगना उठाते समय
हाथों को सूझी हो थोड़ी सी चुहल
और आपे से बाहर होकर
भभक उठी हो लालटेन

हो सकता है कि जब
सही सलामत जल गयी हो लालटेन
तो अंधेरे को रोशनी से सींचने की
हमारी अकुताहट को ही
बरदाश्त न कर पायी हो
नाजुक सी लालटेन
और घटित हो गया भभकने का उपक्रम

दरअसल लालटेन का भभकना
जलने और बुझने के बीच की वह प्रक्रिया है
जिसके लिए कुछ भाषाओं ने तो
शब्द तक नहीं गढ़े
फिर भी घटित हो गयी वह प्रक्रिया
जो शब्दों की मोहताज नहीं होती कभी
जो गढ़ लेती है खुद ही अपनी भाषा
जो बना लेती है खुद ही अपनी परिभाषा

यह एक छटपटाहट थी
जो अनुष्ठान की तरह नहीं
बल्कि एक वाकये की तरह घटित हुई
अंधेरे के खिलाफ बिगुल बजाती हुई
रोशनी को सही रास्ते पर
चलने के लिए सचेत करती हुई
और लोगों ने जब यह मान लिया
कि भभक कर आखिरकार
बुझ ही जायगी लालटेन
तो अनुमानों को गलत साबित करती हुई

www.tadbhav.com

फैल गयी आग
समूचे लालटेन में
चनक गया शीशा कई जगहों से

वैसे विशेषज्ञ लोग यह उपाय बताते हैं कि
भभकती लालटेन को बुझा देना ही
श्रेयस्कर होता है
और भी तमाम उपाय किये जाते हैं
इस दुनिया में
भभकना रोकने खातिर
लेकिन तमाम सावधानियों के बाद भी
किसी उपेक्षा
या किसी असावधानी से
भभक उठती है लालटेन
अपनी बोली में
अपना रोष
दर्ज कराने खातिर

पानी का रंग

गौर से देखा एक दिन
तो पाया कि
पानी का भी एक रंग हुआ करता है
अलग बात है यह कि
नहीं मिल पाया इस रंग को आज तक
कोई मुनासिब नाम

अपनी बेनामी में भी जैसे जी लेते हैं तमाम लोग
आंखों से ओझल रह कर भी अपने मौसम में
जैसे खिल उठते हैं तमाम फूल
गुमनाम रह कर भी
जैसे अपना वजूद बनाये रखते हैं तमाम जीव
पानी भी अपने समस्त तरल गुणों के साथ
बहता आ रहा है अलमस्त
निरंतर इस दुनिया में

www.tadbhav.com

हरियाली की जोत जलाते हुए
जीवन की फुलवारी में लुकाछिपी खेलते हुए

अनोखा रंग है पानी का
सुख में सुख की तरह उल्लसित होते हुए
दुःख में दुःख के विषाद से गुजरते हुए
कहीं कोई अलगा नहीं पाता
पानी से रंग को
रंग से पानी को
कोई छननी छान नहीं पाती
कोई सूप फटक नहीं पाता
और अगर ओसाने की कोशिश की किसी ने
तो खुद ही भीग गया वह आपादमस्तक

क्योंकि पानी का अपना पक्का रंग हुआ करता है
इसलिए रंग छुड़ाने की सारी प्रविधियां भी
पड़ गयीं इसके सामने बेकार

किसी कारणवश
अगर जम कर बन गया बर्फ
या फिर किसी तपिश से उड़ गया
भाप बन कर हवा में
तब भी बदरंग नहीं पड़ा
बचा रहा हमेशा एक रंग
प्यास के संग संग
अगर देखना हो पानी का रंग
तो चले जाओ
किसी बहती हुई नदी से बात करने
अगर पहचानना हो इसे
तो किसी मजदूर के पसीने में
पहचानने की कोशिश करो
तब भी अगर कामयाबी न मिल पाये
तो शरद की किसी अलसायी सुबह
पत्तियों से बात करती ओस की बूंदों को
ध्यान से सुनो

www.tadbhav.com

अगरचे बेनाम से इस पनीले रंग को
इसकी सारी रंगीनियत के साथ
बचाये रखना चाहते हो
तो बचा लो
अपनी आंखों में थोड़ा सा पानी
जहां से फूटते आये हैं
रंगों के तमाम सोते

www.tadbhav.com